SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

धनेश्वरी ध्रुव, एम.एड. शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
सविता सालोमन, (Ph.D.), शिक्षा संकाय,
प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
धनेश्वरी ध्रुव, एम.एड. शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
सविता सालोमन, (Ph.D.), शिक्षा संकाय,
प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 20/07/2022
Revised on : -----
Accepted on : 27/07/2022
Plagiarism : 09% on 20/07/2022

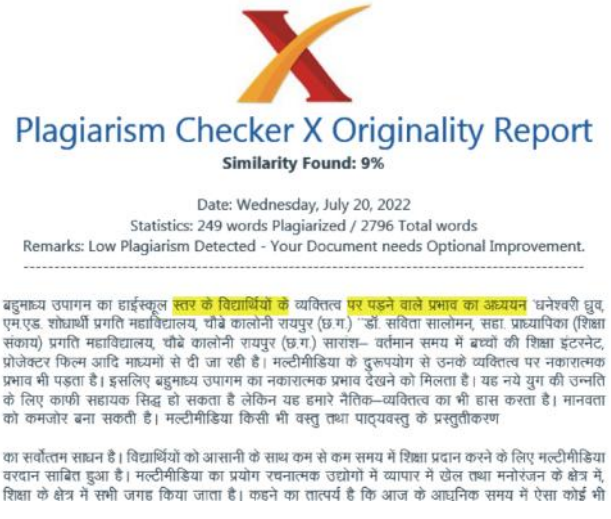

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 9%

Date: Wednesday, July 20, 2022
Statistics: 249 words Plagiarized / 2796 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन 'धनेश्वरी ध्रुव, एम.एड. शोधार्थी प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी रायपुर (छ.ग.) "डॉ. सविता सालोमन, सहा. प्राध्यापिका (शिक्षा संकाय) प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी रायपुर (छ.ग.) सारांश– वर्तमान समय में बच्चों की शिक्षा इंटरनेट, प्रोजेक्टर फिल्म आदि माध्यमों से दी जा रही है। मल्टीमीडिया के दुरूपयोग से उनके व्यक्तित्व पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है। इसलिए बहुमाध्य उपागम का नकारात्मक प्रभाव देखने को मिलता है। यह नये युग की उन्नति के लिए काफी सहायक सिद्ध हो सकता है लेकिन यह हमारे नैतिक–व्यक्तित्व का भी ह्रास करता है। मानवता को कमजोर बना सकती है। मल्टीमीडिया किसी भी वस्तु तथा पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण

का सर्वोत्तम साधन है। विद्यार्थियों को आसानी के साथ कम से कम समय में शिक्षा प्रदान करने के लिए मल्टीमीडिया वरदान साबित हुआ है। मल्टीमीडिया का प्रयोग रचनात्मक उद्योगों में व्यापार में खेल तथा मनोरंजन के क्षेत्र में, शिक्षा के क्षेत्र में सभी जगह किया जाता है। कहने का तात्पर्य है कि आज के आधुनिक समय में ऐसा कोई भी

शोध सार

वर्तमान समय में बच्चों की शिक्षा इंटरनेट, प्रोजेक्टर फिल्म आदि माध्यमों से दी जा रही है। मल्टीमीडिया के दुरूपयोग से उनके व्यक्तित्व पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है इसलिए बहुमाध्य उपागम का नकारात्मक प्रभाव देखने को मिलता है। यह नये युग की उन्नति के लिए काफी सहायक सिद्ध हो सकता है, लेकिन यह हमारे नैतिक–व्यक्तित्व का भी ह्रास करता है। मानवता को कमजोर बना सकती है। मल्टीमीडिया किसी भी वस्तु तथा पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण का सर्वोत्तम साधन है। विद्यार्थियों को आसानी के साथ कम से कम समय में शिक्षा प्रदान करने के लिए मल्टीमीडिया वरदान साबित हुआ है। मल्टीमीडिया का प्रयोग रचनात्मक उद्योगों में व्यापार में खेल तथा मनोरंजन के क्षेत्र में, शिक्षा के क्षेत्र में सभी जगह किया जाता है। कहने का तात्पर्य है कि आज के आधुनिक समय में ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है जहां मल्टीमीडिया का प्रयोग नहीं किया जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना था। प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। रायपुर के कक्षा 9वीं के 100 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है। दोनों विद्यालय से 50–50 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोधकार्य में उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर आंकड़े एकत्रित करने के लिए प्रमाणीकृत स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु मध्यमान, मानक विचलन विधियों का प्रयोग किया गया है। परिणामों में बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के छात्रों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर पाया गया।

मुख्य शब्द

बहुमाध्य, विद्यार्थी.

भूमिका

किसी भी देश की आर्थिक समृद्धि में विज्ञान एवं तकनीकी का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह तथ्य वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में स्पष्टतः दृष्टिगोचर हो रहा है। नई पीढ़ी अपनी खोजी प्रकृति के कारण पूर्व ज्ञान के आधार पर नित नये अविष्कारों को जन्म दे रही है। इन अविष्कारों की श्रृंखला में कक्षा शिक्षण अध्ययन अध्यापन में बहुमाध्य उपागम के प्रयोग का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान परिदृश्य में इसने शिक्षा के परिक्षेत्र को प्रभावित किया है तथा यह शिक्षा एवं मानव के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान बना चुका है।

मल्टीमीडिया का उपयोग वर्तमान समय की मांग बन गई है। पिछले दो साल में कोरोना महामारी के कारण भारत में शिक्षा तथा अन्य सरकारी कामकाज के लिए इसकी उपयोगिता काफी उपयेगी सिद्ध हुई है। पहले समय में मोबाइल इंटरनेट की पढ़ाई, कामकाज को फिजूल समझा जाता था लेकिन समय के साथ समय के मांग के कारण इसकी प्राथमिकता बढ़ी है। बच्चों के व्यक्तित्व गुणों एवं समायोजन में भिन्नता पाई जाती है जिसका प्रभाव उनकी शिक्षा पर पड़ता है। देश के बच्चों की शिक्षा बालक बालिकाओं हेतु पृथक विद्यालयों तथा सह–शिक्षा शालाओं दोनों में दी जा रही है।

बहुमाध्य उपागम का अर्थ

इसमें एक से अधिक संचार माध्यमों का प्रयोग किया जाता है इसलिए इसे मल्टीमीडिया उपागम कहते हैं। इसमें चित्र, आवाज, संगीत, फोटो आदि का प्रयोग किया जाता है। मल्टीमीडिया एक माध्यम होता है जिसके द्वारा विभिन्न प्रकार की जानकारियों को विभिन्न प्रकार के माध्यमों जैसे कि टैक्सट, ऑडियों, ग्राफिक्स, एनिमेशन, वीडियो का संयोजन करके दर्शको तक पहुंचाया जा सकता है। बहुमाध्य उपागम का अर्थ बहुत से माध्यमों के प्रयोग से नहीं है बल्कि वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए अनेक माध्यमों तथा विधाओं के उपयुक्त सुनियोजित उपयोग से है। मल्टीमीडिया उपागम में विभिन्न माध्यमों में अनेक सॉफ्टवेयर के समूह अथवा उनका एकत्रीकरण सम्मिलित होता है। यह एक ऐसा सामूहिक प्रस्तुतीकरण है जिसमें विषय वस्तु, ग्राफिक्स, चित्र, आवाज, संगीत तथा वीडियो इमेज आदि का कम्प्यूटर द्वारा प्रयोग किया जाता है।

सरल शब्दों में कहे तो मल्टीमीडिया एक ऐसा माध्यम है जो डिजीटल रूप से हेरफेर किए गए सूचनाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से स्थानांतरित करने का उपयोगकर्ता को अनुमति देता है। आम तौर पर मल्टीमीडिया टेक्नोलॉजी डेटा और सूचनाओं को आगे के संदर्भ के लिए संग्रहित पारंपरिक विषयगत रूपों का उपयोग करने की अनुमति देता है। मल्टीमीडिया के अंतर्गत CD-ROM एक सस्ता और पोर्टेबल स्टोरेज मीडिया है जिसका उपयोग जानकारी या सूचनाओं के माध्यम से मल्टीमीडिया टेक्नोलॉजी में डेटा और सूचनाओं को संग्रहित करने के लिए किया जाता है।

व्यक्तित्व का अर्थ

किसी व्यक्ति को सिर्फ उसके आकार के अनुसार देख कर उसके बारे में अनुमान लगा लेना शायद गलत होगा। यहाँ इसका अर्थ है कि नजरिया क्या है और उसी वस्तु या किसी प्राणी को वह किस प्रकार देखता है, वह कैसा सोचता है। संपूर्ण रूप में हम उन्हें तो व्यक्ति के आंतरिक पहलुओं को हम उस व्यक्ति के व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार करते हैं।

परिभाषा

इसकी परिभाषा भिन्न–भिन्न लोगों ने अपने दृष्टिकोण के अनुसार दी है क्योंकि इसी को हम व्यक्तित्व की व्यक्तिगत भिन्नता के रूप में देखते हैं। हर व्यक्ति का सोचने का एवं देखने का नजरिया दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता

है क्योंकि दो व्यक्ति की सोच और दृष्टिकोण एक जैसे नहीं होते। तो चलिये जानते हैं इसकी परिभाषा

1. **वैलेंटाइन के अनुसारः** ''व्यक्तित्व जन्मजात और अर्जित विशेषताओं का योग है।''
2. **मैकर्डि के अनुसारः** ''यह रूचियों का वह आंकलन है जो व्यक्ति के व्यवहार को एक विशेष प्रकार का व्यक्तित्व रूप प्रदान करता है।''
3. **ओलोपोर्ट के अनुसारः** ''यह व्यक्ति के अंदर उन मनोशारीरिक संस्थाओं का योग है जो वातावरण के साथ उसका समायोजन स्थापित करता है।

व्यक्तित्व की विशेषता

- इसमें व्यक्तियों के आंतरिक पक्ष पर बल दिया जाता है।
- यह परिवर्तनशील होता है क्योंकि व्यक्ति सदैव कुछ न कुछ सीखते रहता है और अपने व्यवहार में परिवर्तन लाते रहता है।
- यह स्वचलित होता है अर्थात् कोई व्यक्ति अपने आप के असली रूप को कितना ही छुपाना चाहे पर वह अपनी क्रिया के माध्यम से संचालित कर ही देता है।
- व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्धारक घटक उसका पर्यावरण और वंशानुगत होता है। इन्ही के द्वारा उसका मानसिक एवं बौद्धिक विकास होता है।
- यह सामाजिक दृष्टिकोण का मूर्त रूप है।

पूर्व में किये गये शोधकार्य

भारत में किए गए शोध अध्ययन

अर्चना चतुर्वेदी (2001) ''विभिन्न सांस्कृतिक संगठनों द्वारा संचालित विद्यालयों के व्यक्तित्व गुणों, नैतिक मूल्यों और राष्ट्रीय जागरूकता की भावना का अध्ययन'' किया। विद्यालयों की शिक्षा और संपूर्ण वातावरण पर उनकी संस्कृति की छाप होती है जो बालक–बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास, नैतिक मूल्यों और राष्ट्रीय जागरूकता की भावना के निर्माण में सहायक होती है।

एम. वर्मा (2003) ने लाभान्वित व अलाभान्वित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अध्ययन आहरतों एवं व्यक्तित्व का अध्ययन से पाया कि अध्ययन आदतों का लाभान्वित और अलाभान्वित दोनों समूहों में महत्वपूर्ण अंतर है। यह पृथकता अर्थपूर्ण है।

विदेशों में किये गए शोध अध्ययन

एच. टेबरः "With Prespective of Human Relationship" विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में अनुसंधानकर्ता ने पाया कि मित्र समूह में भाग लेने से जीवन प्रभावित होता है। यदि विकास की आयु में मित्र समूह में भाग लेने की आवश्यकता पूरी नहीं होती है तो बालक के व्यक्तित्व पर बुरा असर पड़ता है जो कुसमायोजन उत्पन्न करता है।

एल. सी. बानिकलः "Childrens Presonality Adjustment and the Social Economics" विषय पर अध्ययन किया। अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य था छात्र के व्यक्तित्व का समायोजन एवं पारिवारिक समायोजन संबंधी समस्याओं का अध्ययन करना। उन्होंने दो सौ छप्पन विद्यार्थियों के न्यादर्श पर समाजमिति व समायोजन संबंधी प्रश्नावली का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में पाया गया कि जो विद्यार्थी उच्च परिवार से आते हैं वे अपना व्यक्तित्व सरलता से समायोजित कर लेते हैं।

समस्या कथन

''बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।''

अध्ययन का उद्देश्य

- बहुमाध्य उपागम का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।
- बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के छात्रों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के छात्राओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

प्रकार्यात्मक परिभाषा

उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तरः उच्च माध्यमिक स्तर से अभिप्राय कक्षा 9वीं व 10वीं से है।

बहुमाध्य उपागम/मल्टीमीडियाः बहुमाध्य उपागम या मल्टीमीडिया का अर्थ है एक से अधिक मीडिया। दूसरे शब्दों में टेलीविजन प्रोग्राम, मूवीज यहाँ तक कि सचित्र पुस्तके यह सभी मल्टीमीडिया के उदाहरण है। ये सभी टैक्स इमेजस, साउंड और मुवमेंट आदि। मल्टीमीडिया टेक्नोलॉजी कम्प्यूटर आधारित एप्लीकेशन से संबंधित है जिसमें लोग डिजिटल और प्रिंट एलिमेंट के साथ आइडियाज और इन्फॉर्मेशन कम्यूनिकेशन करते हैं।

व्यक्तित्वः व्यक्तित्व को अंग्रेजी में Personality कहते हैं जो लैटिन शब्द Person से बना है जिसका अर्थ मुखौटा होता है। व्यक्तित्व एक में एक व्यक्ति की सारी खूबियाँ, अच्छे व बुरे सभी गुण आते हैं।

अध्ययन की परिकल्पना

- बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के छात्रों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
- बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के छात्राओं के व्यक्तित्व के प्रभाव का सार्थक अंतर पाया जायेगा।
- बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के छात्रों के व्यक्तित्व के प्रभाव का सार्थक अंतर पाया जायेगा।

अध्ययन का परिसीमन

- प्रस्तुत शोध अध्ययन में रायपुर शहर के स्कूल का चयन किया गया है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन में रायपुर शहर के एक शासकीय हिन्दी माध्यम विद्यालय और एक अशासकीय अंग्रेजी विद्यालय का चयन किया गया है।
- उच्च माध्यमिक स्तर पर केवल कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
- प्रस्तुत शोध में केवल 100 विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा जिसमें 50 विद्यार्थी शासकीय विद्यालय से और 50 विद्यार्थी अशासकीय विद्यालय से लिया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

रायपुर के कक्षा 9वीं के 100 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है। दोनों विद्यालय से 50–50 विद्यार्थियों का चयन किया गया है जिसमें शासकीय विद्यालय से 50 छात्र तथा अशासकीय विद्यालय से 50 विद्यार्थी लिया गया है। इनसे प्राप्त परिणाम का पूर्णतः प्रतिनिधित्व करेंगे।

उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य में उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर आंकड़े एकत्रित करने के लिए प्रमाणीकृत स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन हेतु मध्यमान, मानक विचलन विधियों का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना का प्रमापीकरण एवं परिणाम

प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्ता द्वारा तीन परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है, जिसका प्रमापीकरण एवं ग्राफ निम्न है:

परिकल्पना क्रमांक 01

बहुमाध्य उपागम का हाई स्कूल स्तर के छात्रो के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक रूप से अंतर पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 01: बहुमाध्य उपागम का हाई स्कूल स्तर को छात्रो के व्यक्तित्व पर प्रभाव की संख्या, माध्य, प्रमाप विचलन t मूल्य एवं सार्थकता दर्शाने वाली सारणी

चर	संख्या	माध्य	प्रमाप विचलन	मूल्य	सार्थकता
शासकीय विद्यालय के बालक	25	12.65	3.36	0.193	0.5 स्तर पर सार्थक नही
अशासकीय विद्यालय के बालक	25	12.46	6.01		

df=48 *(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)*

व्याख्या

सारणी क्रमांक 1 से स्पष्ट है कि शासकीय विद्यालय एवं अशासकीय विद्यालय में से 25–25 छात्रो का चयन किया गया है। शासकीय विद्यालय के बालक के व्यक्तित्व का प्रभाव का मध्यमान 12.65 तथा प्रमाप विचलन 3.36 है तथा अशासकीय विद्यालय के छात्रो का मध्यमान 12.46 तथा प्रमाप विचलन 6.01 है। शासकीय विद्यालय के छात्रो एवं अशासकीय विद्यालय के छात्रों के व्यक्तित्व के प्रभाव के मध्यमानों में अंतर है। अशासकीय विद्यालय के छात्रो का मध्यमान शासकीय विद्यालय के छात्रो से कम है। शासकीय विद्यालय के छात्रों एवं अशासकीय विद्यालय के छात्रो के व्यक्तित्व अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए ज मूल्य की गणना की जो कि 0.193 है df=48 के लिए 0.05 स्तर पर t का सारणी मूल्य 2.66 है जो हमारे द्वारा ज मूल्य से कम है। अतः सार्थक अंतर पाया गया व परिकल्पना अस्वीकृत होती है। इससे स्पष्ट है कि बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के छात्रों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर पाया गया, परिकल्पना की पुष्टि होती है।

आरेख क्रमांक 01: बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के छात्रो के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव की संख्या माध्य एवं प्रमाप विचलन दर्शाने वाला आरेख

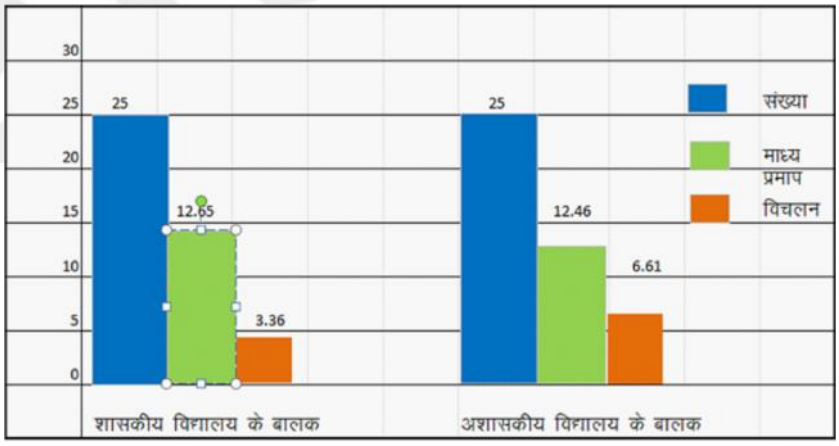

परिकल्पना क्रमांक 02

बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के छात्राओं के व्यक्तित्व के प्रभाव का सार्थक अंतर पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 02: बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के छात्रओं के व्यक्तित्व के प्रभाव की संख्या, माध्य, प्रमाप विचलन ज मूल्य एवं सार्थकता दर्शाने वाली सारणी

चर	संख्या	माध्य	प्रमाप विचलन	t मूल्य	सार्थकता
शासकीय विद्यालय के बालिका	25	20.76	6.62	1.5	0.5 स्तर पर सार्थक नही
अशासकीय विद्यालय के बालिका	25	18.08	4.77		

df=48 *(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)*

व्याख्या

सारणी क्रमांक 2 से स्पष्ट है कि शासकीय विद्यालय व अशासकीय विद्यालय से 25–25 छात्राओं का चयन किया गया था। शासकीय विद्यालय की छात्राओं के व्यक्तित्व पर प्रभाव का मध्यमान 20.76 तथा प्रमाप विचलन 6.62 है तथा अशासकीय विद्यालय की छात्राओं का मध्यमान 18.08 तथा प्रमाप विचलन 4.77 है।

शासकीय व अशासकीय विद्यालय के छात्राओं के व्यक्तित्व पर प्रभाव के मध्यमानों में अंतर है। शासकीय विद्यालय के छात्राओं की अपेक्षा अशासकीय विद्यालय के छात्राओं का मध्यमान कम है। शासकीय व अशासकीय विद्यालय की बालिकाओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए ज मूल्य की गणना जो कि 1.5 है। df=48 के लिए 0.05 स्तर पर t का सारणी मूल्य है अतः अंतर सार्थक पाया गया सो परिकल्पना अस्वीकृत होती है। इससे स्पष्ट है कि बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन का सार्थक अंतर पाया गया परिकल्पना की पुष्टि होती है।

आरेख क्रमांक 02: बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के छात्राओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव की संख्या,माध्य एवं प्रमाप विचलन दर्शाने वाला आरेख

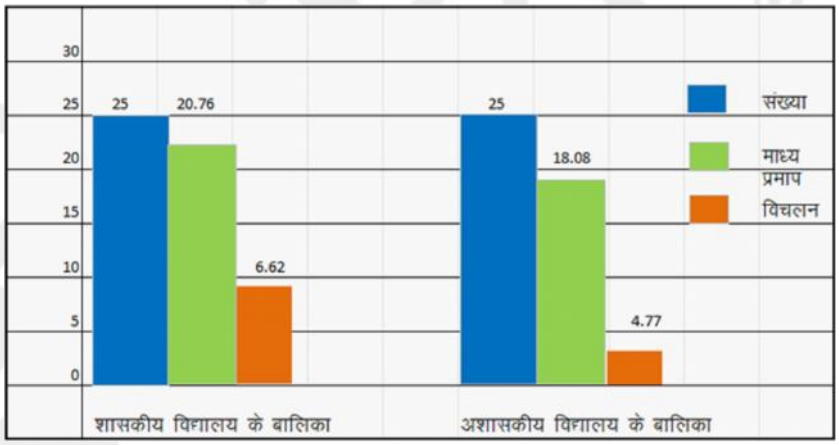

परिकल्पना क्रमांक 03

बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के छात्र छात्राओं के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का सार्थक अंतर पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 03: बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व के प्रभाव की संख्या, माध्य प्रमाप विचलन, CR मूल्य एवं सार्थकता दर्शाने वाली दर्शाने वाली सारणी

चर	संख्या	माध्य	प्रमाप विचलन	CR मूल्य	सार्थकता
शासकीय विद्यालय के विद्यार्थी	50	09.83	3.44	2.18	0.1 स्तर पर सार्थक नही
अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थी	50	12.06	6.34		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

व्याख्या

सारणी क्रमांक 3 से स्पष्ट है कि शासकीय विद्यालय एवं अशासकीय विद्यालय में से 50–50 छात्र छात्राओं चयन किया गया। शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों का व्यक्तित्व प्रभाव का मध्यमान 9.83 तथा प्रमाप विचलन 3.44 है तथा अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 12.06 तथा प्रमाप विचलन 6.34 है। शासकीय विद्यालय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व प्रभाव के मध्यमानो में अंतर है। अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यक्तित्व प्रभाव शासकीय विद्यालयो के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है। शासकीय विद्यालय के विद्यार्थी एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए CR मूल्य की गणना की जो कि 2.18 है। df=48 के लिये 0.05 स्तर पर CR का सरणी मूल्य 2.66 है जो हमारे द्वारा CR मूल्य से कम है व अंतर सार्थक पाया गया। अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है। इससे स्पष्ट है कि बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर पाया गया, परिकल्पना की पुष्टि होती है।

आरेख क्रमांक 03: बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव की संख्या, माध्य एवं प्रमाप विचलन दर्शाने वाला आरेख

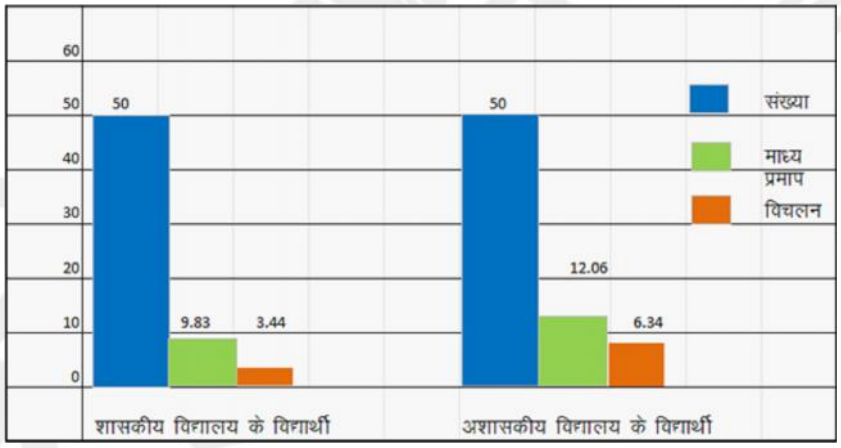

निष्कर्ष

- बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के छात्रों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर पाया गया।
- बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन का सार्थक अंतर पाया गया।
- बहुमाध्य उपागम का हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर पाया गया।

सुझाव

1. शिक्षा में बहुमाध्य उपागम का प्रयोग एक सशक्त साधन। इससे विद्यार्थी पालको शिक्षको व जन–सामान्य को परिचित कराना आवश्यक है।
2. शिक्षकों को इस उपागम को कक्षा शिक्षण में उपयोग करने हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए।
3. शासन शिक्षकों को निर्देशित कर सकते है कि आधुनिक शिक्षण पद्धतियों में नवीन तकनीकी कौशलो का प्रयोग करते हुए छात्रों को ऐसी शिक्षा प्रदान करे जिससे विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर मे वृध्दि के साथ–साथ उनके व्यक्तित्व का भी विकास हो सके।
4. किशोरावस्था में बालक–बालिकाओं में होने वाले विभिन्न परिवर्तनों से उन्हें अवगत कराकर उचित निर्देशित दिया जाना चाहिए।

अनुकरणीय अध्ययन

1. किशोरावस्था में बालक–बालिकाओं में होने वाले संवेगात्मक परिवर्तनों का अध्ययन।
2. किशोर विद्यार्थियों द्वारा आत्महत्या की बढ़ती समस्या का अध्ययन।
3. किशोर विद्यार्थियों में विपरित लिंग के प्रति आकर्षण का तुलनात्मक अध्ययन।
4. किशोर विद्यार्थियों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता का अध्ययन।
5. किशोर विद्यार्थियों में यौन शिक्षा के प्रति अभिरूचि का अध्ययन।
6. कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों में परिवार तथा समाज में समायोजन की क्षमता का अध्ययन।

संदर्भ सूची

1. अस्थाना विपिन, श्रीवास्तव विजय एवं अस्थाना निधि (2013) शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी '' (तृतीय संस्करण), आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।
2. गौतम, टी.आर. एवं चौबे, टी.पी. (2009) शिक्षा मनोविज्ञान के आधारभूत तत्व (द्वितीय संस्करण), आगरा, राधा प्रकाशन।
3. हन्फी, एम.ए. हन्फी, शबीना (2014) 'मनोविज्ञान में शैक्षिक अनुसंधान एवं साख्यिकी, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।
4. सिंह, भूषण शशि (2012) ''शोध प्रविधि'' दिल्ली अर्जुन पब्लिकेशन हाउस।
5. सरीन, रामपाल एवं शर्मा, ओ.पी. (2015) ''शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।
6. सिंह, रामपाल एवं शर्मा ओ.पी. (2015) ''शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।
7. वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव , डी. एस. (2009) बाल मनोविज्ञानः बाल विकास'' आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।
8. उपाध्याय, राधावल्लभ (2016) निर्देशन एवं परामर्श'' आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।
9. योगेन्द्रजीत, भाई (2013) ''शिक्षा मनोविज्ञान'' आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।
10. पाठक, पी.डी. (2008) शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।
11. मंगल, एस.के. (2008) शिक्षा मनोविज्ञान'' रोहतक, हरियाणा।

****